Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 15, Issue No. 12, December-2018, ISSN 2230-7540

भारत-अमेरिका सम्बन्धः एक अध्ययन

Sumit*

Teacher, Department of Political Science

सारांश - भारत विश्व का एक विस्तृत भू-भाग और विशाल जनसंख्या वाला देश होने के कारण इसकी विदेशनीति का विश्व की राजनीति पर गहरा प्रभाव पड़ता है। भारत का सांस्कृतिक अतीत अत्यन्त गौरवमय होने से न केवल पड़ौसी देशों के साथ, अपितु विदेशों के साथ भी भारत का सांस्कृतिक एवं व्यापारिक आदान-प्रदान होता रहा है। देश और विदेश के अध्येयता और पर्यवेक्षक भारत की विदेशनीति को आदर्श प्रधान अधिक और स्वहित प्रधान कम मानते हैं। किन्तु भारत की विदेश नीति के आधार मात्र आदर्श अथवा कोरे मानववादी दृष्टिकोण को लेकर नहीं बल्कि सुनिश्चित राष्ट्रीय हित के विभिन्न पहलुओं को दृष्टि में रखकर ही तय किये गये हैं।

----------X----------

भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के सम्बन्धों का युद्धोत्तर इतिहास अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का एक ऐसा दुखद प्रसंग है जिसे कि परम्परागत मुहावरे में अभिव्यक्त करना कठिन है। दोनों देशों के बीच सम्बन्धों का रेखाचित्र मित्रता की चाह कटुता, तनाव, अलगाव और अविश्वास के दायरे में निरन्तर चढ़ता उतरता रहा है और अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय महत्व के प्रसंगों पर विचार और व्यवहार में मतभेद ही अधिक उजागर हुए हैं।

भारत-अमेरिका सम्बन्ध राजनीति विज्ञान के अध्ययनकर्ता के लिए न केवल एक महत्वपूर्ण विषय है। बल्कि वह रोचक विषय भी है। यह दो असमान राष्ट्रों के बीच का सम्बन्ध है जिनमें से एक महाशक्ति है और दूसरा विकासशील राष्ट्र है जो 21वीं शताब्दी में एक महाशक्ति के रूप में उभर सकता है। भारत दक्षिण एशिया की प्रमुख शक्ति है और दक्षिण-एशिया ऐसा क्षेत्र है जिसके दायें-बायें दो विस्फोटनशील एशियाई क्षेत्र हैं जिनमें अमेरिका अपने सामरिक हितों को देखता है। अतएवं अमेरिका का दक्षिण-एशिया में रुचि लेना और भारत के साथ सम्बन्ध बनाये रखना स्वाभाविक ही है। सोवियत-संघ के विघटन के बाद मध्य एशिया भी अमेरिका के आकर्षण का केन्द्र बनने लगा है। मध्य एशियाई राष्ट्रों के साथ भारत के सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण हैं यह एक ऐसा तथ्य है जो शीत युद्ध की समाप्ति के बाद अमेरिका द्वारा भारत के साथ सम्बन्ध सुधारने की प्रक्रिया को तर्कसंगत बनाता है। भारत-अमेरिका सम्बन्धों की प्रकृति असमान सम्बन्धों की है। सम्बन्धों के इस समीकरण में अमेरिका एक वैश्विक शक्ति अथवा महाशक्ति है और भारत एक क्षेत्रीय शक्ति अथवा मध्यम श्रेणी की शक्ति है। दोनों राष्ट्रों को अपनी स्थिति का एहसास है और वे अपनी-अपनी शक्ति से भली-भाँति परिचित हैं और उन्हें अपनी सीमाओं का भी भान है।

महाशक्ति के रूप में अपनी विशिष्ट स्थिति को समझते हुए अमेरिका इस प्रयास में रहता है कि कोई राष्ट्र प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से वर्तमान अथवा भविष्य में उसके प्रभुत्व को चुनौति न दे सके इसलिए वह दान व दण्ड की नीति (कैरेट एण्ड स्टिक पॉलिसी) पर चलता है। दूसरी ओर भारत असमान सम्बन्धों के समीकरण की अनिवार्यताओं और समीकरण के बड़े घटक द्वारा छोटे घटक पर दबाव डालने की प्रकृति की स्वाभिवकता को भारत भली-भाँति जानता है। और वह यह भी जानता है कि बड़े घटक में पुरस्कृत अथवा दण्डित करने की शक्ति है। यह कथन वैचारिक स्तर पर तो तर्कसंगत लगता ही है। सम्बन्धों का वर्णन और विश्लेषण करते समय हम तथ्य का व्यावहारिक पक्ष उभर कर हमारे सामने आया है कि जब-जब भारत के नेतृत्व ने आगे बढ़कर अमेरिकी नेतृत्व में सहयोग के लिए हाथ मिलाया और उसको आश्वस्त किया कि वह उसकी विशेष स्थिति का सामना करता है और वह "अति स्वतन्त्र" नीति का अनुसरण नहीं करेगा तो अमेरिकी नेत2त्व ने भारत का पुरस्कृत किया। प्रधानमन्त्री श्रीमति इन्दिरा गांधी ने राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन के साथ जो व्यक्तिगत समीकरण 1981 और 1982 में बढ़ाया। उसके फलस्वरूप अमेरिका ने न केवल भारत की आर्थिक कठिनाई यों के प्रति संवेदनशीलता दिखाते हुए उससे उबरने में सहायता दी बल्कि प्रौद्योगिकी और प्रतिरक्षा के क्षेत्रों में भारत इस प्रकार सहयोग देने का प्रस्ताव किया जो

www.ignited.in

पिछले तीन दशकों में किसी भी अमेरिका के राष्ट्रपति ने नहीं किया था। अपनी माँ की नीतियों को और आगे बढ़ाते हुए प्रधानमन्त्री राजीव गांधी ने राष्ट्रपति रीगन और राष्ट्रपति बुश (प्रथम) के साथ व्यक्तिगत समीकरण का विकास किया। यदि हम भारत-अमेरिका सम्बन्धों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर दृष्टि डाले तो यह ज्ञात होता है कि भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरू ने राष्ट्रपति आइजनहावर और राष्ट्रपति जान एफ. कैनेडी से व्यक्तिगत सम्बन्धों का विकास कर भारत के आर्थिक विकास एवं सैन्य तंत्र को सुदृढ़ करने के लिए अमेरिका से सहायता प्राप्त की थी। 1980 के दशक के अन्तिम वर्षों में एवं 1990 के आरम्भ के वर्षों में जब भारत ने परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में प्राप्त उपलब्धियों के साथ-साथ प्रक्षेपास्त्र कार्यक्रम को आगे बढ़ाया तो अमेरिका को ऐसा आभास हुआ कि भारत जिस गति से अपनी सामरिक शक्ति का विकास करने में सफलता प्राप्त कर रहा है। वह भविष्य में उसे सामरिक चुनौति दे सकता है।

अतएव् रीगन और बुश (प्रथम) की सरकारों ने भारत को अपने प्रक्षेपास्त्र कार्यक्रम को रोकने का सुझाव दिया व एम.टी.सी.आर. की स्थापना की और भारत के विरूद्ध दण्डात्मक कार्यवाही भी की।

भारत पर दबाव डालने के लिए अमेरिका ने डेलिब्रेट प्रेज लीक्स के माध्यम से इस तथ्य का रहस्योद्घाटन किया कि पाकिस्तान को चीन से परमाणु आयुद्ध बनाने के लिए सहायता मिल रही है और चीन पाकिस्तान को प्रक्षेपास्त्र प्रौद्योगिकी का हस्तान्तरण कर रहा है किन्तु सरकारी तौर पर उसने इन तथ्यों की जानकारी के बारे में अस्पष्टता की नीति अपनाई। अमेरिका भारत को परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए बाध्य करने हेतु समय-समय पर प्रयास करता रहा है। उन प्रयासों में वांशिगंटन ने पाकिस्तान को माध्यम बनाया।

अमेरिका भारत की उपेक्षा नहीं कर सकता क्योंकि उसकी जनसंख्या विश्व में चीन के बाद सबसे अधिक है। उसके प्राकृतिक संसाधन विशाल है। उसने औद्योगिक, प्रौद्योगिकी और प्रतिरक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है और तीसरी दुनिया के राष्ट्रों में उसका महत्वपूर्ण स्थान और अन्त में भारत विश्व का सबसे बड़ा जनतांत्रिक देश है। अमेरिका यह चाहता है कि भारत और पाकिस्तान दक्षिण एशिया में शांति बनाये रखे इसके लिए वह उन्हें एक मंच पर लाने के लिए सतत् प्रयासरत है। अमेरिका यह नहीं चाहता कि भारत स्वतन्त्र केन्द्र के रूप में उभरे और यह भी नहीं चाहता कि इतना कमजोर भी हो कि चीन के विरूद्ध उसे प्रतिभार न बनाया जा सके।

अमेरिका की कोशिश है कि भारत, रूस और चीन के साथ ज्यादा मेलजोल ना बढ़ाए क्योंकि ऐसा हो जाने पर यह अमेरिका के वर्चस्व को चुनौति साबित होगा।

वर्तमान में परमाणु व्यवस्था स्थापित है उसे अमेरिका बनाए रखना चाहता है किन्तु भारत उसे भेदभाव पूर्ण मानता है क्योंकि परमाणु आयुद्धों से सम्पन्न पांच राष्ट्र स्वयं तो परमाणु प्रसार को अपने हित में बढ़ावा देते हैं, अर्थात् वे स्वयं तो अपने परमाणु आयुद्धों के भण्डार को बढ़ा रहे हैं और अन्य राष्ट्र जिन्होंने इस क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति कर ली है उन्हें न्यूक्लीयर क्लब में प्रवेश का अधिकार नहीं देना चाहते हैं। 11 व 13 मई 1998 को भारत द्वारा किये गये परमाणु परीक्षणों से भारत की वर्तमान वैश्विक परमाणु व्यवस्था के प्रति विरोध को द्योतक है।

भारत ने पिछले पांच दशकों में जो प्रगति की है और जिन क्षमताओं का विकास किया है तथा जिस प्रकार विश्व में शांति स्थापित करने के प्रयासों में वैश्विक समुदाय के साथ सहयोग करता आ रहा है। इनको ध्यान में रखते हुए विश्व के कई राष्ट्र यह चाहते है कि भारत को संयुक्त राष्ट्र संघ की सुरक्षा परिषद् का सदस्य बनाया जाये।

अमेरिका भारत को महत्वपूर्ण बाजारों में से एक मानता है तथा वह उसका दौहन करना चाहता है। भारत की संरक्षणवादी नीतियों को वह अपने रास्ते में एक अवरोध मानता ळें

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. जैन, बी.एम.: इण्डिया एण्ड द यू.एस. 1961-1963, न्यू देहली, रेडियन्ट पब्लिशर्स, 1987

2. ग्लेजर, सुलोचना, राघवन एण्ड नाथन ग्लेजर (स): कौन्फलिक्टिंग इमेजेज इण्डिया एण्ड दी यू.एस मेरीलेण्ड, द रिवरडेल कम्पनी पब्लिशर्स, 1990

3. विनोद एम.डी.: यूनाइटेड स्टेट्स फॉरेन पॉलिसी टुआर्डस इण्डिया - ए डायग्नोसिस आॅफ अमेरिकन एप्रोच, न्यू देहली, लान्सर बुक्स पब्लिशर्स, 1991

4. कामथ, पी.एम. एण्ड ए. ए. मुतालिक देसाई: इण्डिया पर्सपेक्टिव्स ऑन द यू.स. लिटरेचर एण्ड फॉरेन अफेयर्स, न्यू देहली, प्रस्टेज बुक्स पब्लिशर्स, 1993

www.ignited.in

5. लिमये, सतु पी.: यू.एस. - इण्डियन रिलेशन्स: द परसुट ऑफ़ अकोमॉडेशन, कोलेडोरो, बेसव्यू प्रेस बोल्डर, 1993

Corresponding Author

Sumit*

Teacher, Department of Political Science

sumit09091986@gmail.com